thearyasamaj.org

वैदिक सभ्यता-संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता की पोषक पत्रिका

ओ३म् क्रतो स्मर ।

वर्ष-8, अंक-3 | नवम्बर 2014 | मार्गशीर्ष
सृष्टि संवत् 1960853115 | विक्रमी संवत् 2071 | दयानन्दाब्द 191

नो वस्यसस्कृधि । साम० 1047

हे प्रभो ! हमें उत्कृष्ट जीवन वाला बनाइए ।

सम्पादक

मूलचन्द गुप्त

ओम् प्रतिष्ठान, कुसुमालय, बी-1/27, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली-110045

thearyasamaj.org

ओ३म्

ओ३म्-सुप्रभा

वैदिक सभ्यता-संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता की पोषक पत्रिका

• *परामर्श*

डॉ० धर्मपाल आर्य
(पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार)
ए/एच-16, शालीमार बाग,
दिल्ली-110088
दूरभाष-011-27472014
011-27471776

• *सम्पादक*

मूलचन्द गुप्त
(पूर्व प्रधान आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली)

• *प्रकाशक*

मूलचन्द गुप्त,
अध्यक्ष, **ओम्-प्रतिष्ठान**
कुसुमालय, बी-1/27, रघुनगर,
पंखा रोड, नई दिल्ली-110045
दूरभाष-9650886070
011-25394083

ई-मेल-Ompratisthan@gmail.com

ओ३म्-सुप्रभा में प्रकाशित लेखों के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है । वे विचार लेखक के अपने हैं ।

प्रकाशक-मुद्रक-स्वामी-मूलचन्द गुप्त द्वारा सम्पादित, तथा वैदिक प्रेस, 995/51, गली नं० 17, कैलाशनगर, दिल्ली-31 (फोन-22081646) से मुद्रित कराकर, ओम् प्रतिष्ठान, कुसुमालय, बी-1/27, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली- 45, से प्रकाशित किया । न्यायक्षेत्र-दिल्ली

उद्देश्य

- वैदिक सभ्यता, संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता का पोषण करना, वैदिक विचार-धारा के अनुसार मानव-निर्माण करना, समरस और समेकित समाज का संगठन करना, विश्व भर में सुख और शान्ति की स्थापना करने का प्रयास करना **ओम्-प्रतिष्ठान** का मुख्य उद्देश्य है ।
- इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए समय समय पर विभिन्न बहुआयामी गतिविधियों का संचालन किया जाएगा ।
- रचनात्मक और प्रेरक साहित्य का सृजन, प्रकाशन और प्रसारण का, इन गति-विधियों में प्रमुख स्थान होगा ।
- इस पत्रिका में समय-समय पर आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, नैतिक, वैश्विक चेतना जागृत करने से सम्बन्धित विषयों पर मौलिक लेख तथा समाचार प्रकाशित किए जायेंगे ।
- **ओ३म्** परमपिता परमात्मा का निज नाम है । परमात्मा इस सृष्टि का नियन्ता है । सृष्टि से सम्बन्धित सभी विषयों का इसमें समावेश किया जाएगा ।
- **ओ३म्-सुप्रभा** का प्रकाशन पूर्णतया निजी स्तर पर किया जा रहा है । उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रति मास देश-विदेश के आर्य विद्वानों, लेखकों, उपदेशकों, कार्यकर्ताओं, प्रकाशकों एवं संस्थाओं को ओ३म्-सुप्रभा **निःशुल्क** भेजी ज़ा रही है।
- लघु-पत्रिका के कारण, प्रकाशनार्थ लेख न भेजें ।
- सुधी पाठकों से निवेदन है कि वे अपने सुझाव भेजकर कृतार्थ करते रहें ।

thearyasamaj.org

ओ३म्-सुप्रभा

वैदिक सभ्यता-संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता की पोषक पत्रिका

रचना, स्थिति और प्रलय, कर्मों का फल जिस का विधान है ।
ओ३म् सुप्रभा ज्ञान अनुपम, सुरभित जिस से जन कुसुम प्राण है ।।

वर्ष–8, अंक–3 नवम्बर 2014 मार्गशीर्ष
सृष्टि संवत् 1960853115 विक्रमी संवत् 2071 दयानन्दाब्द 191

ओ३म्–महिमा

पुरुषोवाव यज्ञः । अहं यज्ञः मा विलोप्सीय इति ।

–महात्मा नारायण स्वामी

छान्दोग्य उपनिषद् 3.16.4-7

व्याख्या–बड़े यज्ञों में, प्रातः सवन, माध्यन्दिन सवन और तृतीय सवन, ये तीन सवन होते हैं । इन तीनों सवनों के वसु, रुद्र और आदित्य, क्रम से देवता होते हैं । इन यज्ञों में गायत्री, त्रिष्टुप और जगती छन्दों का क्रमशः प्रयोग हुआ करता है । इस बात का उल्लेख करते हुए, मनुष्य को भी एक यज्ञमय जीवन रखने वाला व्यक्ति ठहराया है । और उसके शिक्षा कालीन जीवन रूपी बृहद् यज्ञ के तीन भाग करके पहले वसु संख्या 24 वर्ष ब्रह्मचर्य वाले भाग को प्रातः सवन, दूसरे, रुद्र संख्या 36 वर्ष ब्रह्मचर्य वाले भाग को माध्यन्दिन सवन और तीसरे आदित्य संख्या 48 वर्ष ब्रह्मचर्य वाले भाग को तृतीय सवन ठहराया गया है । उद्देश्य इसका यह है कि मनुष्य अपने जीवन को यज्ञमय बनाकर अपनी आयु की वृद्धि करे । इस उद्देश्य की पूर्ति के सम्बन्ध में जो शिक्षायें इस खण्ड में दी गई हैं, वे इस प्रकार हैं :–

(1) पुरी=शरीर में, शेते=रहने से, जीवात्मा को पुरुष कहते हैं । इस जीव का उद्धार अपने ही करने से हुआ करता है । एक जगह कहा गया है कि आत्मा ही से आत्मा का उद्धार करना चाहिये क्योंकि आत्मा ही आत्मा का बन्धु और आत्मा ही आत्मा का शत्रु है । इसी का उपाय इस खण्ड में बतलाया गया है ।

(2) यदि कोई ब्रह्मचर्य काल में चाहे वह वसु, रुद्र या आदित्य कोई काल हो । ब्रह्मचर्य के पालन करने में विघ्नकारक हो तो उसे प्रेम से समझा कर कहे कि यह मेरा ब्रह्मचर्य काल है आप इसमें बाधक न होकर यत्न करें

thearyasamaj.org

जिससे मैं आगे के ब्रह्मचर्य काल का भी भलीभांति पालन कर सकूं, और अपने भीतर उसके पालन करने का दृढ़ निश्चय रक्खे । इस प्रकार नम्रता के साथ अपना दृढ़ संकल्प प्रकट करने से ब्रह्मचारी में आत्मोन्नति का साधन, आत्मविश्वास बढ़ा करता है । और वह अगद=रोग=विघ्न रहित हो जाता है ।

(3) इन सवनों में क्रमशः गायत्री, त्रिष्टुप और जगती छन्द का, जो क्रमशः 24, 44 और 48 अक्षरों के होते हैं, प्रयोग हुआ करता है । इन छन्दों की अक्षर संख्या, वसु, रुद्र और आदित्य ब्रह्मचारियों के ब्रह्मचर्य काम से मिलती है । यह भी एक हेतु ब्रह्मचर्यकालीन जीवन को सवनत्रय से उपमा देने का है ।

(4) महीदास ऐतरेय के प्रमाण से प्रमाणित किया गया है कि तीनों प्रकार के ब्रह्मचर्य का यथाविधि पालन करने वाले कम से कम (24+44+48 =) 116 वर्ष की बहुमूल्य आयु का उपभोग किया करते हैं । ●

ओ३म्-महिमा-

—सत्यदेव प्रसाद आर्य "मरुत"

कभी भूलो नहीं ओ३म् नाम रे ।
शुभ कर्म करो सुबह शाम रे ॥

गलती करते फिर पछताते,
दण्ड के डर से रहे घबराते ।
कोई देख रहा है तेरे काम रे ॥
शुभ कर्म करो सुबह शाम रे ॥

दुष्कर्मों से प्यारे बचना,
फल निश्चित ही मिले समझना ।
कर अपने लिये इन्तजाम रे ॥
शुभ कर्म करो सुबह शाम रे ॥

सुखकर हैं नेकी की राहें,
भूल से दुःख होता अनचाहे ।
किसी नजरों में होना ना बदनाम रे ॥
शुभ कर्म करो सुबह शाम रे ॥

धन दौलत और माल खजाना,
सारे जग का ताना बाना ।
साथ जाये ना यह ताम झाम रे ॥
शुभ कर्म करो सुबह शाम रे ॥

—नेमदार गंज [नवादा]

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

ओ३म् सुप्रभा का नवम्बर 2014 का अंक सुधी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है । हम उन वैदिक विद्वानों, आर्य नेताओं तथा कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के प्रति श्रद्धावनत हैं जिन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में तथा आर्यसमाज की गतिविधियों को सुसंचालित करने में आजीवन यथा शक्ति तन, मन, धन से अहर्निश प्रयास किया । इस अंक में भी हमने यथापूर्व वैदिक विद्वानों तथा आर्य नेताओं एवं आर्यसमाज के कार्यों के परिचायक लेख दिए हैं ।

आर्यसमाज एक आन्दोलन है । आर्यसमाज ने सदैव सत्य के ग्रहण करने तथा असत्यको छोड़ने पर बल दिया है । आर्यसमाज ने सामाजिक न्याय की लड़ाई लड़ी । आर्यसमाज ने स्वाधीनता आन्दोलन में योगदान दिया । हैदराबाद आर्य सत्याग्रह, हिन्दी आन्दोलन, सिंध का सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में आन्दोलन तथा गोरक्षा आन्दोलन, धर्मरक्षा महाभियान आन्दोलन, सतीप्रथा के विरोध में आन्दोलन आदि में आर्यसमाज के नेताओं, विद्वानों तथा कार्यकर्त्ताओं की अग्रणी भूमिका रही है ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गौरक्षा तथा अन्य निरीह पशुओं की रक्षा पर विशेष बल दिया था । उन्होंने 'गो-करुणानिधि' नामक पुस्तक लिखकर गाय के महत्त्व का प्रतिपादन किया । उन्होंने लिखा था–वे धर्मात्मा विद्वान लोग धन्य हैं जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव, अभिप्राय, सृष्टिक्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण और आप्तों के आचार से अविरुद्ध चलके सब संसार को सुख पहुंचाते हैं । उन्होंने गाय से क्या लाभ हैं ? इस विषय पर भी विस्तार से लिखा है । वस्तुतः कृषि प्रधान देश भारत की गौरक्षा आधार भित्ति है जो यहां की अर्थव्यवस्था को सुपोषित करती है । ऋषिवर ने 'गोकृष्यादि रक्षिणी सभा' भी बनाई थी । उन्होंने यह भी लिखा था–'हे महाराजाधिराज जगदीश्वर ! जो इनको (गवादि पशुओं की रक्षा तथा कृषि कार्य आदि की रक्षा और वृद्धि) कोई न बचावे तो आप इनकी रक्षा करने और हमसे कराने में शीघ्र उद्यत हूजिए ।'

हम महान् शिक्षाशास्त्री महात्मा हंसराज, पं० प्रकाशवीर शास्त्री, तथा लाला चतुरसेन गुप्त को भी सादर स्मरण करते हैं । त्याग और तपस्या की मूर्ति महात्मा हंसराज का जन्म 19 अप्रैल 1864 को हुआ और उनका निधन 15 नवम्बर 1938 को हुआ । महात्मा हंसराज डी० ए० वी० हाई स्कूल के 1886 में अवैतनिक आचार्य बने । वे डी० ए० वी० संस्थाओं की प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष रहे । आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में उनकी विशिष्ट

thearyasamaj.org

भूमिका रही है वे सुयोग्य लेखक और वक्ता थे । आज की डी० ए० वी० संस्थाओं की उपलब्धियों के मूल में महात्मा हंसराज जी का विशेष योगदान है । डी० ए० वी० विश्वविद्यालय की स्थापना हो चुकी है उन्होंने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन भी किया । पं० प्रकाशवीर शास्त्री अद्वितीय वक्ता एवं कुशल राजनीतिज्ञ थे । उनका जन्म 30 दिसम्बर 1923 को तथा निधन-23 नवम्बर 1979 को हुआ । उनकी आर्यसमाज तथा ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों में प्रगाढ़ आस्था थी । उन्होंने भारतीय आर्य उपदेशक सम्मेलन का गठन किया । वे लोकसभा के सदस्य चुने गए । उन्होंने अनेक देशों का भ्रमण किया । आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वे प्रधान रहे । वे परोपकारिणी सभा के भी सदस्य रहे । उन्होंने आर्ष ग्रन्थों का प्रणयन किया । 'सार्वदेशिक' साप्ताहिक के सम्पादक तथा सार्वदेशिक प्रेस के संचालक लाला चतुरसेन गुप्त का जन्म 1 नवम्बर 1906 को शामली में हुआ । आपने गहन स्वाध्याय के बल पर विद्वत्ता अर्जित की तथा लेखन में सिद्धहस्तता प्राप्त की । आपने अनेक ग्रन्थों का समय समय पर प्रकाशन किया । आपने अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थ स्वयं भी लिखे । आपने महाभारत प्रकाशन, राष्ट्रनिधि प्रकाशन, सत्यार्थ प्रकाश धार्मिक ट्रस्ट प्रकाशन तथा सार्वदेशिक प्रकाशन एवं आर्य व्यवहार प्रकाशन के माध्यम से अनेक उपयोगी दुर्लभ ग्रन्थ प्रकाशित किए ।

14 नवम्बर को पं० जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिन पर बाल दिवस का आयोजन किया जाता है । बचपन बचाओ आन्दोलन के प्रणेता श्री कैलाश सत्यार्थी जी को इस वर्ष का नोबेल शान्ति पुरस्कार दिया गया है । यह आर्यसमाज के सिद्धान्तों के अनुरूप युवाओं के निर्माण की दिशा में एक बहुत बड़ा कदम है । श्री सत्यार्थी आर्यसमाज के सिद्धान्तों से अनुप्राणित है हम स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करते हैं ।

—सम्पादक

आर्य साहित्यसेवी विश्वकोश

दस खण्डों में प्रस्तावित आर्य साहित्यसेवी विश्वकोश में पाँच हजार दिवंगत/वर्तमान आर्य साहित्यसेवियों का जीवन-वृत्त/साहित्य-परिचय प्रकाशित करने की योजना है । यदि आपने अथवा आपके परिजनों/परिचितों ने आर्यसमाज के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार के लिए किसी भी भाषा में अथवा किसी भी विधा में लेखन-कार्य किया है, तो निःशुल्क परिचय-प्रकाशन के लिए निर्धारित प्रपत्र के अनुसार विस्तृत परिचय, चित्र तथा प्रकाशित साहित्य भेजें ।

thearyasamaj.org

ऋषि ने हमको जिला दिया है

ऋषि ने गरल पिया है, हमको जिला दिया है।
मरती मनुष्यता को अमृत पिला दिया है।

कोई न था ठिकाना असहाय जिन्दगी का।
दुख-दर्द था फसाना, निरुपाय जिन्दगी का।

हारे थके खुदी से मारे-मरे पड़े थे।
जकड़े जरा-मरण से पथ में रुके खड़े थे।

हम कौन हैं, कहाँ हैं, रास्ता बता दिया है?
ऋषि ने गरल पिया है, हमको जिला दिया है॥

संसार सार वाला, यह साधना का घर है।
हर श्वास यज्ञ करती बलिदान का सफर है।

नित वेद ज्ञान गंगा की तारती लहर है।
तप की मशाल थामे ऋषि का प्रचण्ड स्वर है।

वैदिक उषा उगाकर जीवन खिला दिया है।
ऋषि ने गरल पिया है, हमको जिला दिया है॥

सौगन्ध खा रहे हैं युग गान हम करेंगे।
मुर्दा मनुष्य में नव प्राण हम भरेंगे।

हम यज्ञ-अग्नि को ले शुचि साक्षी चले हैं।
आंधी बुझायेगी क्या, तूफान में खड़े हैं।

तम ने लगा तमाचा ऐसा जला दिया है।
ऋषि ने गरल पिया है, हमको जिला दिया है॥

लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र' साहित्यालंकार
भोजपुरा मैनपुरी (उ० प्र०)

thearyasamaj.org

75वें स्मृति दिवस पर विशेष–

आर्यों के कर्त्तव्य

–महात्मा हंसराज

[महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की स्मृति में संस्थापित डी०ए०वी० संस्थाओं के प्रमुख प्रेरणा-स्रोत महात्मा हंसराज का जन्म पंजाब के होशियारपुर जनपद के बजवाड़ा नामक कस्बे में 19 अप्रैल, 1864 को हुआ था। 1885 में आपने कोलकाता विश्वविद्यालय से बी० ए० कर लाहौर में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की स्मृति में स्थापित डी०ए०वी० कॉलेज की सेवा हेतु स्वयं को प्रस्तुत किया। आप इसके अवैतनिक आचार्य बने। 1912 तक आपने इस संस्था का पल्लवन किया। आपको डी०ए०वी० संस्थाओं की प्रबन्धकर्तृ समिति का अध्यक्ष बनाया गया। आपने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की स्थापना की। आपने जीवन-पर्यन्त आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहण किया। 15 नवम्बर, 1938 को लाहौर में आपका निधन हुआ। लगभग 90 वर्ष पूर्व लिखा आपका यह महत्वपूर्ण लेख आज भी सामयिक और सार्थक है। आशा है कि पाठक इससे प्रेरणा लेंगे। –सम्पादक]

प्रथम आवश्यक बात –

अपने–आपको मत छिपाओ :

आर्यसमाज की उन्नति के लिए सबसे पहली बात यह होनी चाहिए कि प्रत्येक आर्यसमाजी अपने आपको सगर्व आर्यसमाजी घोषित करे। कहीं भी अपने आर्यत्व को छिपाने का प्रयत्न न करे। किसी भी प्रलोभन, भय अथवा डर के कारण अपने आपको आर्यपन को तिलांजलि दे देना, आर्यसमाज के लिए अत्यन्त घातक है। संसार में जितने भी मत हैं, सबमें यह बात भली प्रकार पाई जाती है, जैसा कि हजरत ईसा ने कहा है, "जो संसार में मुझसे इन्कार करेगा, मैं प्रलय के दिन उससे इन्कार करूंगा।" इसका भाव यह है कि जो व्यक्ति ईसा का चेला होकर भय के कारण यह प्रकट करेगा कि मैं ईसाई नहीं हूं तो प्रलय के दिन जब खुदा का दरबार लगेगा तो ईसा कहता है कि मैं उस दिन खुदा के सामने साक्षी देते समय इस तथ्य से इन्कार कर दूंगा कि यह ईसाई है, अर्थात् मैं उसके ईसाई होने से इन्कारी हो जाऊंगा। इस प्रकार वह नरक में भेजा जायेगा। इसी प्रकार मुसलमानों में भी अपने मत के सम्बन्ध में कठोर आज्ञा पाई जाती है। मुसलमानों में सम्भवतः सब कुकर्मों का प्रायश्चित सम्भव है, सब पाप क्षमा हो सकते हैं, परन्तु जो खुदा तथा उसके रसूल से इन्कार करे, वह कदापि क्षमा नहीं किया जा सकता। वह अवश्यमेव नरक की ज्वाला में जलता है।

बौद्धों में भी यह रीति थी कि जब कोई नया व्यक्ति बुद्ध-मत स्वीकार करता

thearyasamaj.org

था तो उसे सब लोगों के सम्मुख इन तीन बातों की घोषणा करनी पड़ती थी–

(1) मैं बुद्ध की शरण में जाता हूं। (2) मैं धर्म की शरण में जाता हूं। (3) मैं संघ की शरण में जाता हूं। इस प्रकार उससे सार्वजनिक स्वीकृति ली जाती थी कि वह बुद्ध-मत में प्रविष्ट हो गया है।

सिखों में भी गुरु गोविन्दसिंह ने सिखों के लिए प्रत्यक्ष चिह्न नियत किये, यद्यपि तब सिखों के लिए बड़ा विकट समय था। आजकल जैसे सर्प के मारने वाले को पुरस्कार प्राप्त होता है, इसी प्रकार मुगल शासकों के काल में जो व्यक्ति सिख का सिर लाये, शासन की ओर से उसे पुरस्कृत किया जाता था। इस प्रकार सिख गाजर-मूली की भांति काटे जाते थे। इतनी यातनाओं के होते हुए भी गुरु ने सिखों के लिए अपने बाह्य धार्मिक चिह्न नियत करने आवश्यक समझे। वैदिक धर्म ने भी इस बात की पहचान के लिए कि अमुक व्यक्ति वैदिक धर्मी है, चिह्न नियत किये हैं : (1) शिखा रखना प्रत्येक वैदिक धर्मी के लिए, चाहे वह किसी भी वर्ण का हो, आवश्यक है। दूसरा चिंह्न जो वैदिक धर्मियों के लिए नियत है, वह यज्ञोपवीत है। इसके अतिरिक्त तीसरा चिह्न जो कि आर्यों के लिए नियत है, वह प्राचीन ऋषिमुनियों की अभिवादन की विधि, एक शब्द अर्थात् 'नमस्ते' है।

अतः सब मतों में यह शिक्षा दी गई है कि वे अपने धर्म अथवा विश्वास को कतई न छिपायें, प्रत्युत विपत्ति के समय सब छाती तानकर अपने मत को प्रकट करें। जिस प्रकार यह बात अन्य मतों के लिए आवश्यक है, वैसे ही आर्यसमाजियों के लिए भी आवश्यक है। जो व्यक्ति हृदय से तो आर्यसमाजी है परन्तु किसी दबाव के कारण आर्यसमाजी होने से इन्कारी है, वह आर्यसमाज को घोर हानि पहुंचाता है। ऐसे लोगों ने सचमुच आर्यसमाज को बहुत हानि पहुंचाई है। अतः ऐ आर्य भाइयो ! तुम कभी अपने आपको मत छिपाओ। जहां भी तुम्हें अवसर प्राप्त हो, तुम अपने-आपको प्रसिद्ध करो कि मैं आर्यसमाजी हूं। अपने गृह पर कहो कि मैं आर्यसमाजी हूं। अपने पिता से, अपनी माता से, सगे-सम्बन्धियों से, जहां तुम कार्य करते हो, वहां के सहयोगियों से, अपने मित्रों से और यदि अवसर प्राप्त हो तो अपने अधिकारियों से कह दो कि मैं आर्यसमाजी हूं। तुम जहां जाओ, अपने आर्यपन को मत छिपाओ ! सार्वजनिक रूप से कहो कि मैं आर्यसमाजी हूं। स्मरण रखो जो व्यक्ति तनिक भय से आर्यसमाजी होने से इन्कार कर देता है, वह आर्यसमाज के लिए एक कलंक है तथा वह आर्यसमाज की कुछ सेवा भी नहीं कर सकता।

आर्यों का दूसरा कर्त्तव्य – संध्या-प्रार्थना :

आर्यों के लिए दूसरी आवश्यक बात संध्या तथा प्रार्थना है। ये दोनों प्रत्येक आर्यसमाजी के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इनसे धार्मिक जीवन में

thearyasamaj.org

अत्यन्त लाभ होता है । प्रश्न होगा कि संध्या तथा प्रार्थना से क्या बनता है ? वाटरवर्क्स से, जिसके साथ ही नल लगे हुए हैं जो नगर के चारों ओर पानी पहुंचाते हैं, नगर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जल जाता है । यदि वे नल मार्ग में कहीं टूट जाएं तो क्या होगा ? तुम टूटी को भले ही कितना घुमाओ, जल नहीं निकलेगा । इसका क्या कारण है ? कारण यह है कि जलाशय से इस टूटी का सम्बन्ध टूट गया है । यही स्थिति तार (Telegraph) की है । एक व्यक्ति एक स्थान पर बैठा सहस्त्रों कोस तक समाचार पहुंचाता है । परन्तु यदि मार्ग में कहीं तार टूट जाये अथवा समाचार लेने वाले को ही कहीं दूर बिठा दिया जाए तो भले ही कितनी शक्ति लगा दो, तार का समाचार नहीं आएगा। इसका अर्थ भी वही है कि तार अपने स्रोत से दूर हो गया है ।

अतः जिस प्रकार नल में जल आने के लिए ये आवश्यक है कि इसका संबंध जलाशय से जुड़ा रहे, इसी प्रकार तार के समाचार के लिए यह आवश्यक है कि वह भी अपने स्रोत से जुड़ा रहे । इसी प्रकार मनुष्य में बल, शक्ति तथा ज्ञान की लहर चलाने तथा उसे प्रवाहित रखने के लिए आवश्यक है कि उसका सम्बन्ध भी सब शक्तियों के भण्डार तथा ज्ञान के स्रोत परमात्मा से जुड़ा रहे तथा यह क्रम टूटने न पाये । वेद में कहा है :

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि । वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि ॥ यजु. 19-9

'तू तेज है, वीर्य का स्रोत है तथा बल का भण्डार भी तू ही है ।' इस प्रकार जब हम अपने विचारों के द्वारा परमात्मा के साथ अपना सम्बन्ध बनाए रखेंगे, उसके साथ अपना नाता जोड़ लेंगे तो इसका परिणाम यह होगा कि हममें शक्ति, बल तथा ज्ञान की शक्तियां आती रहेंगी, जो प्रतिक्षण हमें प्रसन्न रखेंगी तथा हमारे प्रफुल्लित होने में सहायता प्रदान करेंगी । परमेश्वर के साथ ऐसा सम्बन्ध प्रार्थना के द्वारा ही बना रह सकता है । प्रार्थना में इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि तुम परमात्मा को सर्वत्र व्यापक जानो तथा समझो कि वह तुम्हारी प्रत्येक बात को भली प्रकार से सुन रहा है, जैसा कि संध्या के मन्त्रों में कहा है ।

प्राची दिगग्निरधिपति..........आदि-आदि

'हे ईश्वर ! तू पूर्व की ओर विद्यमान है, तू पश्चिम की ओर भी है, तू उत्तर की ओर है तथा तू दक्षिण की ओर भी है, तू नीचे विद्यमान है तथा साथ ही तू ऊपर भी है ।' इस प्रकार परमात्मा को सर्वव्यापक जानकर उससे सम्बन्ध जोड़ो । उस परमात्मा को अनुभव करने का अभ्यास सदा करते रहो ताकि यह क्रम टूट ना जाये, प्रत्युत अधिक दृढ़ होकर तुम्हारे लिए अधिक आनन्द तथा सुख का कारण हो ।

प्रार्थना के अमृत में विष मत घोलो

परमात्मा की प्रार्थना करने में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि

thearyasamaj.org

ईर्ष्या तथा द्वेष की प्रार्थना कभी स्वीकार नहीं होती। उदाहरण के लिए यदि एक विद्यार्थी यह प्रार्थना करे कि अमुक विद्यार्थी कक्षा में मुझसे पीछे (नीचे) रह जाये तथा मैं उससे ऊपर हो जाऊं तो यह प्रार्थना पूरी न होगी। अथवा, यदि एक व्यक्ति यह प्रार्थना करे कि मेरा शत्रु नष्ट हो जाये तो ऐसी प्रार्थना भी स्वीकार न होगी, क्योंकि परमात्मा के लिए दोनों एक ही जैसे हैं। ऐसी प्रार्थनाएं करने से स्वयं अपनी ही हानि होती है। परमात्मा से किस प्रकार की प्रार्थना करनी चाहिए ? अपने मन की शुद्धि, ज्ञान की प्राप्ति तथा शुभ कामनाओं के लिए परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए।

सबकी उन्नति के चिन्तक की उन्नति मांगो

प्रार्थना में एक बात यह भी सम्मिलित कर लेनी चाहिए कि हे परमेश्वर! आर्यसमाज की उन्नति हो, वैदिक धर्म का प्रचार हो। इससे आपके देश का भला होगा। यह आर्यसमाज परमात्मा की आज्ञा को फैलाने के लिए एक साधन है। इसकी जितनी उन्नति होगी, उतनी ही संसार में ईश्वर की आज्ञा बढ़ेगी (अर्थात् ईश्वर की आज्ञा के पालन का भाव बढ़ेगा)।

प्रार्थना तथा उपासना के लिए यह बात भी स्मरण करने योग्य है कि प्रार्थना के लिए समय नियत करना चाहिए और उसी समय प्रार्थना करनी चाहिए। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारा कोई कार्य भी समय पर नहीं होता है। परन्तु जो लोग समय पर सोते हैं, उन्हें ज्ञात होगा कि जब उनके सोने अथवा खाने का समय होता है, ठीक उसी समय उन्हें निद्रा लगती है अथवा पेट में भूख के कारण गड़बड़ फैल जाती है। इस प्रकार यदि प्रार्थना के लिए भी समय नियत कर दिया जाए तो इसका परिणाम यह होगा कि उस समय हमें प्रार्थना का ही ध्यान आएगा तथा इस प्रकार ध्यान परमात्मा में शीघ्र लग जायेगा। इसके विपरीत, यदि समय नियत न किया जाए तो परिणाम यह होगा कि कुछ दिन हमें प्रार्थना का ध्यान ही न रहेगा और इस प्रकार नागा (अवकाश) पड़ जायेगा, इसलिये प्रार्थना में रुचि भी न हो सकेगी।

प्रार्थना किस समय करें ?

ब्राह्मण-ग्रन्थों में लिखा है कि हवन सूर्योदय से पूर्व करना चाहिए, दूसरे स्थान पर लिखा है कि सूर्योदय के पश्चात् करना चाहिए, और तीसरे स्थान पर लिखा है कि सूर्योदय के मध्य करना चाहिए। ये तीन विभिन्न सम्मतियां ऋषियों ने दी हैं। इनको पढ़कर प्रश्न उत्पन्न होता है कि इन तीन में से कौन-सी सम्मति उचित है ? इसका उत्तर भी ऋषि देते हैं कि प्रार्थना तथा हवन यदि तुम इन समयों में चाहे किसी समय करो, परन्तु जिस समय करना आरम्भ करो सदा उसी समय ही किया करो। यदि तुम सूर्योदय से पूर्व प्रार्थना अथवा हवन करते हो तो उसी समय ही किया करो और यदि उस से पश्चात अथवा मध्य में आरम्भ करते हो तो सदा ऐसा ही करते रहो,

thearyasamaj.org

आदि । इसकी भी यही विधि है कि संध्या व उपासना के लिए समय नियत करना अत्यन्त आवश्यक है और उस समय प्रार्थना के अतिरिक्त किसी और बात का ध्यान न होना चाहिए ।

फिर प्रार्थना व संध्या श्रद्धा तथा प्रेम के साथ करनी चाहिए, यह नहीं कि संध्या करने बैठे तो पांच मिनट में ही समाप्त कर दी । स्वामी जी ने 'सत्यार्थप्रकाश' में लिखा है कि एक घण्टा प्रातः तथा एक घण्टा सायं प्रार्थना करनी चाहिए । संध्या करते समय जो शब्द हम मुख से बोलें, उनका हमारे हृदय पर प्रभाव होना चाहिए, जैसे जब हम 'भूर्भुवः स्वः' पढ़ रहे हों तो उस समय हमारे मन में वैसे ही विचार आने चाहिए । जल्दी-जल्दी पाठ कर लेने से संध्या के शब्दों का हृदय पर कोई प्रभाव नहीं होता ।

तीसरी आवश्यक बात - स्वाध्याय

तीसरी बात जो आर्यसमाजी के जीवन के लिए आवश्यक है, वह 'स्वाध्याय' है । शास्त्रों में स्वाध्याय की इतनी महिमा है कि अन्य किसी विषय को इतना महत्व नहीं दिया गया । 'सत्यार्थप्रकाश' में स्थान-स्थान पर इसकी पुष्टि की गई है कि स्वाध्याय करो । एक बार इस बात को बारह बार दोहराया है । जब ब्रह्मचारी विद्या समाप्त करके आचार्य से विदा होता है तो उस समय भी ब्रह्मचारी सब-कुछ जानता है, फिर भी आचार्य उसे यह शिक्षा अवश्य देता है कि स्वाध्याय से विमुख मत रहना ! स्वाध्याय में प्रमाद मत करना ! इस प्रकार स्वाध्याय आर्यों के लिए बड़ा आवश्यक है ?

स्वाध्याय का अशुद्ध अर्थ :

खेद है कि आजकल के लोगों ने स्वाध्याय के अशुद्ध अर्थ ले लिए हैं। कोई व्यक्ति सारा दिन उपन्यास पढ़ता रहता है, वह समझता है कि उसने स्वाध्याय कर लिया । कोई व्यक्ति कोई अंग्रेजी पुस्तक पढ़कर यह समझ लेता है कि उसने स्वाध्याय कर लिया । कोई और नैतिक पुस्तक पढ़कर ही स्वाध्याय समाप्त कर लेता है । इनमें से अश्लील उपन्यासों का अध्ययन तो कतई स्वाध्याय नहीं है और अन्य पुस्तकों को पढ़ना भी अत्यन्त निम्न स्तर का स्वाध्याय है । शास्त्रों में लिखा है कि 'स्वाध्याय परमेश्वर की वाणी के पाठ को कहते हैं ।' अतः प्रत्येक आर्यसमाजी को अपने घर में वेदों के ग्रन्थ रखने चाहिए तथा वे अलमारियों में बन्द न रहें, प्रत्युत उनका पाठ भी होना चाहिए। जिन लोगों का इतना सौभाग्य नहीं कि वे वेद मन्त्रों का अर्थ समझ सकें, उनके लिए स्वामी जी का वेदभाष्य उपलब्ध है । वे स्वामी जी के आर्य भाषा के वेदभाष्य का ही स्वाध्याय करें । स्वाध्याय में यह आवश्यक नहीं है कि एक दिन में दस-दस पन्द्रह-पन्द्रह मंत्रों को पढ़ डाला जाये तथा उनको समझा न जाये, प्रत्युत एक मन्त्र पढ़ा जाए तथा उसका अर्थ जानने का यत्न किया

thearyasamaj.org

जाये । इस प्रकार उसे समझा जाये, फिर उसको अपने जीवन में ढाला जाये तब जाकर स्वाध्याय से लाभ होगा । केवल पाठमात्र से इतना लाभ न होगा ।

दूसरी कोटी का स्वाध्याय ऋषिकृत ग्रन्थों का पठन-पाठन है, परन्तु अश्लील उपन्यासों का पढ़ना अत्यन्त बुरा है । विशेष रूप से विद्यार्थियों को इससे बचना चाहिए । विद्यार्थियों के लिए ऐसे उपन्यासों का पढ़ना विष-जैसा प्रभाव रखता है । इसलिए ब्रह्मचारियों को इस प्रकार की सब पुस्तकों से बचना चाहिए ।

चौथी आवश्यक बात - सत्संग :

आर्यों के लिए चौथी आवश्यक बात सत्संग है । ईसाई लोग अपने चर्च में जाकर सत्संग करते हैं । मुसलमान भी मस्जिद में जाकर इकट्ठे नमाज पढ़ते हैं । ऋषि दयानन्द ने भी सत्संग पर बड़ा बल दिया है । यह तो आर्यसमाज की साप्ताहिक बैठक में यह सत्संग ही तो है । इसमें हम सम्मिलित होकर दूसरे बुजुर्गों के उपदेश सुनते हैं । परस्पर मेल-मिलाप से हमारा ज्ञान बढ़ता है, परस्पर सहायता की इच्छा उत्पन्न होती है । संसार में कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं, जो यह कहते हैं कि सत्संग की क्या आवश्यकता है, मनुष्य अपनी उन्नति स्वयं कर सकता है । यदि कोई ऐसा व्यक्ति है तो मैं उसे मनुष्य न समझूंगा। मैं समझूंगा कि वह कोई देवता अथवा ऋषि है । कारण, मनुष्य तो कम-से-कम एक-दूसरे की सहायता के बिना निर्वाह नहीं कर सकता । हम बात-बात में दूसरों की सहायता पर निर्भर हैं । हमारा भोजन, वस्त्र आदि सब-कुछ दूसरों की सहायता से ही तैयार होता है, फिर हम कैसे कह सकते हैं कि हम दूसरों की सहायता पर निर्भर नहीं ?

सत्संग के सम्बन्ध में एक आवश्यक निर्देश :

सत्संग के सम्बन्ध में हमारा यह विचार होना चाहिए कि हमारी संगति अच्छे-से-अच्छे व्यक्तियों के साथ हो । मित्रता बनाते समय प्रत्येक आर्य भाई को इस बात का विचार रखना चाहिए कि उसकी मित्र-मण्डली में अधिक संख्या आर्यसमाजियों की ही हो । कल्पना करो कि दो आर्यसमाजियों की मित्रता है, जिनमें दूसरे के चार मित्र ऐसे हैं, जो आर्यसमाजी नहीं है । अब जिसके चार मित्र आर्यसमाजी नहीं हैं और एक आर्यसमाजी है, उसके विचार में परिवर्तन आना आवश्यक है । इसलिए ऐसे व्यक्ति से मित्रता पैदा करनी चाहिए, जो कि आर्यसमाजी हों तथा अन्य लोगों को आर्यसमाजी विचार का बना लेना चाहिए । हमें सदा आर्यों से ही सम्बन्ध स्थापित करने चाहिए तथा धन-सम्पदा एवं प्रतिष्ठा का विचार कम करना चाहिए ।

thearyasamaj.org

नाता किनसे जोड़े :

आजकल क्या देखने में आता है कि बिरादरियों के बन्धन में जकड़े हुए आर्य भाई अपनी पुत्रियां ऐसे घरों में दे देते हैं, जहां कि पति आर्यसमाजी नहीं होता । परिणाम यह होता है कि वे स्वयं भी कष्ट उठाते हैं, कन्या के लिए भी कष्ट का कारण बनते हैं तथा आर्यसमाज के लिए भी इससे बुरे परिणाम निकलते हैं । अतः अपने नाते-सम्बन्धों तथा वैवाहिक सम्बन्धों में आर्यसमाज का ही अधिक विचार रखना चाहिए । अन्य बिरादरियों तथा धन-सम्पदा का कम विचार करना चाहिए ।

पांचवीं आवश्यक बात – संग्राम :

पांचवी आवश्यक बात प्रत्येक आर्य भाई के लिए जो है, वह संग्राम है । संग्राम का अर्थ है लड़ाई । परन्तु क्या लड़ाई का अर्थ एक-दूसरे की पगड़ियां उतारना है ? क्या यह लड़ाई उचित है ? मेरा भाव इस लड़ाई से नहीं है । मेरा तात्पर्य यह है कि प्रत्येक मनुष्य के मन में भले या बुरे दो प्रकार के विचार उत्पन्न होते हैं । भले-से-भले मनुष्य भी यदि वह देवता या ऋषि नहीं है, कभी-न-कभी बुरा विचार आ ही जाता है, तथा बुरे-से-बुरे मनुष्य में भी जो विषय की गहरी गन्दी दलदल में फंसा होता है, उसमें भी कभी-कभी पवित्र विचार आ सकते हैं । अन्तर केवल यह है कि श्रेष्ठ मनुष्य में बुरे विचार कम आते हैं और बुरे मनुष्यों में श्रेष्ठ विचारों की न्यूनता होती है । ये शुभ-अशुभ विचार मानव-जीवन में संग्राम करते रहते हैं । हमारा कर्तव्य यह है कि हम श्रेष्ठ विचारों को बढ़ाते जायें बुरे विचारों को कम करने का यत्न करें । इसका नाम संग्राम है । प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह संग्राम में प्रविष्ट हो । वह नित्य अपने विचारों को शुद्ध रखने का प्रयत्न करे तथा बुरे विचारों को निकालने का यत्न करे ।

छठी आवश्यक बात – समीक्षा :

आर्यसमाज के लिए छठी आवश्यक बात समीक्षा है, अर्थात् इस बात का पता लगाना कि हमने कहां तक उन्नति की है, किस स्तर तक हम धार्मिक जीवन में आगे बढ़े हैं, हमारे धार्मिक जीवन में क्या परिवर्तन आया है । यह इसलिए आवश्यक है कि यदि हम प्रयत्न करते जायें, परन्तु हमें यह ज्ञात न हो कि हमने कहां तक उन्नति की है तो हमें इससे लाभ नहीं पहुंच सकता । अतः सदा अपना एक उद्देश्य नियत करके उसकी ओर बढ़ना चाहिए ।

ये बातें जिन पर एक-एक करके आर्यसमाजियों को आचरण करना चाहिए । इन पर आचरण करने से उनकी दिन-दुगुनी रात-चौगुनी उन्नति होगी तथा आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म का बोलबाला होगा । ●

[महात्मा हंसराज : जीवनी और विचार–से साभार]

thearyasamaj.org

मानवीय मूल्यों की सुरक्षा वेदों में

—डॉ० स्नेह लता गुप्ता

कभी देखे थे सपने दयानन्द ने,
टूट कर आज सारे बिखर वे गये ।
देश में ये विदेशी चलन क्या हुआ,
मानव मूल्यों के नैतिक पतन हो गये ॥
हाय हैलो के संस्कार हैं आज तो,
अब नमस्ते के फैशन पुराने हुए ।
मां को पदवी मिली है मम्मी मौम की,
पिता पापा डैडी या डैड हो गये ॥
देव भूमि ये ऋषियों की पावन धरा,
जन्मभूमि है ये राम की कृष्ण की ।
धर्मभूमि है महावीर और बुद्ध की,
कर्मभूमि ये ऋषिवर दयानन्द की ॥
वेद के मन्त्र दृष्टा यहीं पर हुए,
हुए गौतम बुद्ध और कणाद यहां ।
योगदर्शन पतंञ्जलि का विख्यात है,
वेद ने भी तो इसके विषय में कहा ॥
यम नियमों का पालन ही तो योग है,
मानव मूल्यों की रक्षा का साधन यहीं ।
सदा मर्यादा वर्णित है ऋग्वेद में,
ऋत को माना है ऋषियों ने भी श्रेष्ठ ही ॥
यहां ऐसे ऋषि और राजा हुए,
सत के मारग पै जो नित्य चलते गये ।
मानव मूल्यों की रक्षा में वे मिट गये,
नाम इतिहास में वे अमर कर गये ॥
पर असत ही असत आज भूलोक में–
सत का दर्शन भी दुर्लभ यहां हो रहा ।
चोरी व्यभिचारी हिंसा का नर्तन यहां,
धर्म मदिरा के मारग से अब बह रहा ॥
भ्रष्टाचारों का अड्डा बना है वतन,
उठ रहा कैसा बर्बादियों का धुआं ।
जन जीवन किसी का सुरक्षित नहीं ,
देश में आज आतंक फैला हुआ ॥

thearyasamaj.org

जो जगत का गुरु था ये भारत कभी,
झुकाते थे सर जिसके आगे सभी ।
आज अपना रहा पश्चिमी संस्कृति,
खो चुका आज अपनी ये पहचान भी ॥
विदेशी नशा आज ऐसा चढ़ा,
वैलण्टाइन डे हम मनाने लगे ।
न सोचा कभी इसके परिणाम को,
यौन सम्बन्धों में सुख को पाने लगे ॥
दूरदर्शन से दूर हो चुकी संस्कृति,
नग्नता का ही दर्शन है इनमें तो अब ।
गाने अश्लील हैं चित्र रंगीन हैं,
देखते इन नजारों को हैं आज सब ॥
तन की उजली हैं मन की जो चंचल अधिक–
विश्व सुन्दरी बनी देश की नारियां ।
तितलियां हैं ये रंगीन किस फूल की,
या जलता हुआ वासना का दिया ॥
सुन्दर बनने की चाहत में सब खो गये,
ब्यूटी पार्लर जरूरी से अब हो गये ।
ये पश्चिम की ऐसी हवा क्या चली,
सारे संस्कार इसमें हवन हो गये ॥
जिन्दगी तो नदी सी बही जा रही,
पर डगर इसकी पथरीली ही हो गई ।
पथ तुमसे 'अशिव' का अगर छुट गया,
तो समझ लो तुम्हारी विजय हो गई ॥
दस लक्षण धरम के तुम्हारे लिये,
पूर्व पुरुषों ने मन से जो निश्चित किये ।
ये विरासत ही मानव के मूल्यों की है,
सौंप करके तुम्हें वे जिसे चल दिये ॥
तुम अमर पुत्र हो अब तो मानव बनो,
आज जागो उठो सो रहे किसलिये ।
दूर कर दो अंधेरा तपस पाप का,
अब जलाओ सदा जयोति के तुम दिये ॥

— 457/3 मंगल पाण्डे नगर, मेरठ

thearyasamaj.org

109वीं जयन्ती पर विशेष—

प्रबुद्ध साहित्य सर्जक
लाला चतुरसेन गुप्त

—पं० नरेन्द्र, हैदराबाद

[हैदराबाद के क्रांतिकारी आर्य नेता पं० नरेन्द्र (स्वामी सोमानन्द सरस्वती) हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के समय आर्य जागृति के सूत्रधार थे। आप पं० रामचन्द्र देहलवी से अत्यधिक प्रभावित थे। आपने स्वामी स्वतंत्रानन्द जी से उपदेशक विद्यालय लाहौर में शास्त्रों का अध्ययन किया था। आपकी हैदराबाद सत्याग्रह में अग्रणी भूमिका थी। आपने पंजाब में हिन्दी रक्षा आन्दोलन तथा दिल्ली के गौरक्षा आन्दोलन में भी नेतृत्व प्रदान किया। आपने मथुरा में आयोजित 'दयानन्द दीक्षा शताब्दी' तथा अलवर में 'आर्य महासम्मेलन' की प्रबन्ध व्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण योगदान किया था। आपने अनेक ग्रंथों का प्रणयन किया। आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान रहे। आर्यसमाज के स्थापना शताब्दी समारोह (1975) में भी आपकी अग्रणी भूमिका थी। कालान्तर में आपने मृत्यु से कुछ समय पूर्व संन्यास की दीक्षा ली और स्वामी सोमानन्द सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुए। आप लाला चतुरसेन गुप्त के निकट संपर्क में आए। इस लेख में आपने लाला जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रस्तुत किया है। —सम्पादक]

वदनं प्रसाद सदनं सदयं हृदयं सुधा सुधो वाचः ।
कारणं परोपकरण येषां केषां न ते वन्द्याः ॥

जिनका मुख मंडल सदा प्रसन्नता से खिला हुआ है, हृदय में दया है, वाणी में अमृत छलकता है, जीवन का एक मात्र कार्य परोपकार ही है, ऐसे चारों गुण सम्पत्ति वाले पुरुष किस के लिए वन्दनीय नहीं है ? अर्थात् सदा आदरणीय हैं।

स्वर्गीय लाला चतुरसेन जी पर संस्कृत काव्य का उपरोक्त श्लोक अक्षरशः घटता है।

आपादमस्तक आर्यसमाजी

लाला जी, सच्चे अर्थों में चलते फिरते आपादमस्तक ठोस, कर्मठ आर्य पुरुष थे। अपने प्रत्येक श्वास प्रश्वास द्वारा उन्होंने आर्यसमाज की ही सेवा की। ऐसा समर्पित जीवन और महर्षि दयानन्द के प्रति एकनिष्ठ व्यक्ति अब हम से जुदा हो गया है। आज इस महानुभाव की पुण्यस्मृति के अवसर पर मैं उनके प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

लाला जी के जीवन में कुछ अद्‌भुत विशेषताएं थीं। वह कभी रोष

thearyasamaj.org

में नहीं आते थे । अत्यन्त विपरीत परिस्थिति में भी वह सदा मुस्कराते रहते थे । निर्भयता और स्पष्टवादिता उनके चरित्र के ज्वलन्त अंग थे ।

पुस्तकों की दुकान : आग लगाने का प्रयास

स्वाध्याय, सत्संग, लगन, धर्मप्रेम और आत्म चिंतन द्वारा एक सामान्य व्यक्ति कहां तक उच्च पद पर पहुंच सकता है, ला० चतुरसेन जी का जीवन इस का जीवन्त प्रमाण है । दिल्ली में फतहपुरी मार्केट में कपड़े की कोठी में नौकरी करते हुए भी लाला जी अपने पास के क्षेत्र में आर्यसमाज का ही प्रचार करते रहते थे । इस के बाद उन्होंने दरीबा कलां में पुस्तकों की दुकान खोल ली । वहां इन्होंने अपने स्वाध्याय और वैचारिक बल के आधार पर एक आर्यसमाजी के रूप में इतनी ख्याति प्राप्त कर ली कि दुकान पर सदा आर्य और सनातनी पंडितों का जमघट लगा रहता । वे अकेले ही उनके साथ शास्त्रार्थ शंका समाधान करते रहते । यह शास्त्रार्थ युग था । संस्कृत के विद्वान न होते हुए भी लाला जी सूझ बूझ, युक्ति, तर्क के धनी और रामायण, महाभारत, पुराणों इत्यादि में पारंगत थे और तत्काल अपने कथ्य की पुष्टि में इन ग्रन्थों के प्रमाण उपस्थित कर पौराणिकों का मुंह बन्द कर देते थे ।

कुछ शरारती लोगों ने चिढ़कर लाला जी की दुकान को आग भी लगा दी थी, पर शीघ्र ही उस पर काबू पा लिया गया और विशेष क्षति होने से बचा लिया गया ।

चतुरसेन जी की प्रेरणा से दिल्ली में ऐतिहासिक शास्त्रार्थ

उस शास्त्रार्थ युग में 'वर्णाश्रम स्वराज्य संघ' की ओर से मन्दिरों में हरिजन प्रवेश का विरोध किया जा रहा था । दिल्ली के परेड मैदान में स्वामी शंकराचार्य के इसी सम्बन्ध में कई भाषण हुए । लाला चतुरसेन वहां जाते रहे। अन्तिम दिन उन्होंने पुराण और पौराणिक दृष्टि से किये गये वेद-शास्त्रों के भाष्य के प्रकाश में से बड़ी निर्भयता से कुछ प्रश्न किये । शंकराचार्य से कुछ उत्तर न बन पड़ा । सभा में खलबली मच गयी। 'वर्णाश्रम स्वराज्य संघ' की ओर से शास्त्रार्थ की चुनौती दी गयी । इस 'संघ' के महासम्मेलन के हेतु उस समय राजधानी में 3000 के लगभग दिग्गज पंडित उपस्थित थे । पर लाला जी ने बड़े साहस, आत्म विश्वास और निर्भयता का परिचय देते हुए इस चुनौती को तत्काल स्वीकार कर लिया । लाला रामगोपाल जी शालवाले (बाद में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती) उस समय उत्साही आर्य युवक के रूप में चतुरसेन जी के निकट सम्पर्क में थे । दोनों ने एक जुट हो इस शास्त्रार्थ

thearyasamaj.org

की व्यवस्था की । आर्यसमाज की ओर से विद्वत्वर, संस्कृत-अंग्रेजी के प्रगल्भ पंडित प्रख्यात आर्य विद्वान पं० व्यास देव शास्त्री साहित्याचार्य एम०ए०, एल०एल०बी० को खड़ा किया गया । सनातन धर्म की ओर से पं० ब्रह्मदत्त शर्मा आगरे वाले थे । मध्यस्थ महामहोपाध्याय पं० गिरधर शर्मा चतुर्वेदी थे । पं० व्यास देव जी के युक्ति प्रमाण प्राबल्य और घंटों तक अनवरत संस्कृत भाषण से १० हजार से अधिक उपस्थित जनता मंत्र मुग्ध हो गयी । चतुर्वेदी जी भी इससे बड़े प्रभावित हुए । अन्त में उन्होंने भी पं० व्यास देव को ही विजयी घोषित किया ।

इस प्रकार लाला चतुरसेन जी के अद्वितीय आत्मविश्वास, वैदिक धर्म के प्रति अडिग श्रद्धा और आस्था, महर्षि दयानन्द के प्रति अविचल निष्ठा इत्यादि सुनहरे गुणों के परिणाम स्वरूप राजधानी में आर्यसमाज का सिक्का जम गया ।

शिव मन्दिर सत्याग्रह का नेतृत्व

चांदनी चौक में घंटाघर के पास एक छोटा शिव मन्दिर था । दिल्ली की मुस्लिम बाहुल्य पुलिस की शरारत और गोरे शासकों की मिलीभगत से इस शिव मन्दिर की मूर्ति उठा ली गयी और पवित्रता नष्ट की गयी । नगर के पौराणिक नेताओं के कान पर जूं तक न रेंगी । ला० रामगोपाल जी शालवाले और ला० चतुरसेन जी तक यह मामला अगले दिन तक पहुंचा । दोनों के नेतृत्व में तत्काल सत्याग्रह की घोषणा कर दी गयी । पं० व्यास देव जी ने भी अन्त तक साथ दिया और नेतृत्व भी किया । कुछ ही समय में न केवल दिल्ली अपितु समस्त देश में सरकार के विरुद्ध बवण्डर खड़ा हो गया । सरकार को अविलम्ब झुकना पड़ा । मन्दिर में पुनः मूर्ति का प्रतिष्ठान किया गया और साथ ही 'ओ३म्' ध्वज मन्दिर पर लहराया गया । लाला चतुरसेन जी ने दृढ़ आर्यसमाजी होते हुए भी हिन्दुत्व की रक्षा और हिन्दू जागरण की भावना से इस आन्दोलन को हाथ में लिया और उसे विजय मंडित किया ।

आर्यसमाज के सत्याग्रह आन्दोलनों में अग्रिम स्थान

आर्यसमाज द्वारा चलाये गये "हैदराबाद सत्याग्रह"; "सिन्ध में सत्यार्थप्रकाश पर पाबन्दी", "पंजाब में हिन्दी रक्षा आन्दोलन" में भी ला० चतुरसेन प्रथम पंक्ति में ही सक्रिय रूप से रहे और अन्य सत्याग्रहियों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर विजय प्रयास में पूर्णतः सन्नद्ध रहे ।

प्रबुद्ध साहित्य सर्जक

इस बहुमुखी आन्दोलन और संघर्षमय जीवन के अतिरिक्त ला०

thearyasamaj.org

चतुरसेन गुप्त आर्य साहित्य के प्रबुद्ध सर्जक तथा हिन्दी के नव दिशा प्रेरक लेखक थे। सब से पहले आप ने ही 'सम्पूर्ण महाभारत' का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया और इसी की बिक्री के लिए भारत के कई प्रदेशों की यात्रा की। पं० अखिलानन्द कृत 'दयानन्द दिग्विजय' के हिन्दी अनुवाद के अतिरिक्त लाला जी ने दर्जनों छोटी बड़ी पुस्तकें लिखीं। डा० राजेन्द्रप्रसाद के राष्ट्रपति काल में आपने राष्ट्रपति के नाम ११ प्रश्न पुस्तिका लिखी जिसे राष्ट्रपति ने आद्योपान्त पढ़कर सरकार का उस ओर ध्यान दिलाने का आश्वासन दिया। आपकी एक पुस्तिका "मैं हंसूं या रोऊं" बहुत प्रचलित हुई जिसमें हिन्दू जाति की दुर्दशा पर अपनी आन्तरिक वेदना भरी हुई थी।

हिन्दुत्व राष्ट्र की प्रबल भावना :

लाला जी के अन्तस्थल में एक ओर हिन्दुजाति की कुम्भकरणी निद्रा, अनेकता, जाति-पांति, सामाजिक कुरीतियों की दासता और निरन्तर हो रहे संख्या ह्रास, दूसरी ओर सरकार की धर्मनिरपेक्षता की मृग-मरिचिका की आड में मुस्लिम तुष्टिकरण और ईसाईयत के राष्ट्रघातक प्रचार को खुली छूट देने की दुर्नीति–इसके फलस्वरूप तीव्र पीड़ा, सन्ताप और वेदना हर दम रहती थी। अपनी बातचीत और जनसम्पर्क में वह सदा इसकी चर्चा करते थे।

व्यक्तिगत शुद्ध जीवन

लाला चतुरसेन जी का निजी जीवन, शुद्ध, सात्विक, परोपकार, पर-कातरता से आपूरित होता हुआ दृढ़ ईश्वरभक्त और महर्षि के प्रति अनन्य रूप से अर्पित था।

सार्वदेशिक सभा से चिरकालिक सम्बन्ध

सार्वदेशिक सभा के लाला जी आजीवन सदस्य थे। सार्वदेशिक सभा व अन्य किसी भी संस्था के लिए उनके अन्दर रत्ती भर भी पदलिप्सा नहीं थी। कई वर्षों से मासिक चले आ रहे "सार्वदेशिक" पत्र को साप्ताहिक रूप देने का साहसपूर्ण कदम आपकी प्रेरणा से ही उठाया गया। इसका एकमात्र श्रेय आपको ही है।

(उत्तराखण्ड टाइम्स, 17-12-1974)

प्रकाशक-मुद्रक-स्वामी-मूलचन्द गुप्त द्वारा सम्पादित, तथा वैदिक प्रेस, 995/51, गली नं०17, कैलाशनगर, दिल्ली-31 (फोन-22081646) से मुद्रित कराकर, ओम् प्रतिष्ठान, कुसुमालय, बी-1/27, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली- 45, से प्रकाशित किया। न्यायक्षेत्र–दिल्ली।